Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

Original Article

ज्ञानरंजन : जीवन एवं सृजन

ज्योति कुमारी
शोधार्थी, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

Manuscript ID: yrj-140412

ISSN: 2277-7911
Impact Factor – 5.958

Volume 14
Issue 4
Oct-Nov-Dec.- 2025
Pp. 89 - 93

Submitted: 06 Oct. 2025
Revised: 26 Oct. 2025
Accepted: 20 Nov. 2025
Published: 10 Dec. 2025

Corresponding Author: *ज्योति कुमारी*

Quick Response Code:

Web. https://yra.ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.21823507

DOI Link: https://doi.org/10.5281/zenodo.21823507

भूमिका:

ज्ञानरंजन हिन्दी साहित्य के शीर्षस्थ कहानीकार, चिंतक तथा हिन्दी की प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका **'पहल'** के यशस्वी संस्थापक-संपादक हैं। साठोत्तरी हिन्दी कहानी आंदोलन के प्रमुख हस्ताक्षरों में उनका नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने अपनी विशिष्ट कथाभाषा, गहन यथार्थबोध तथा मध्यवर्गीय जीवन के सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण के माध्यम से हिन्दी कहानी को नई दृष्टि, नई संवेदना और नया शिल्प प्रदान किया। उनकी रचनाओं में व्यक्ति और समाज के बदलते संबंध, पारिवारिक विघटन, मूल्य-संकट, अजनबीपन, अकेलापन तथा आधुनिक जीवन की जटिलताओं का अत्यंत सजीव एवं मार्मिक चित्रण मिलता है।

साहित्य का संस्कार उन्हें जन्म के साथ ही अपने समृद्ध पारिवारिक परिवेश से प्राप्त हुआ। उनके बाबा फ़ारसी एवं अरबी के प्रकाण्ड विद्वान, रचनाकार तथा छायावाद युग के प्रतिष्ठित समीक्षक थे। परिवार में विद्यमान साहित्यिक वातावरण ने उनके व्यक्तित्व और चिंतन को प्रारम्भ से ही गहराई प्रदान की। उनके गृह-पुस्तकालय में इतिहास, दर्शन, साहित्य, संस्कृति, राजनीति, समाजशास्त्र तथा विविध विषयों से संबंधित दस हजार से अधिक उत्कृष्ट पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं का विशाल संग्रह उपलब्ध था। ज्ञानरंजन ने बाल्यावस्था से ही इन ग्रंथों का गंभीर अध्ययन किया, जिससे उनकी वैचारिक दृष्टि व्यापक, संवेदनशील और आलोचनात्मक बनी।

ज्ञानरंजन ने अपेक्षाकृत कम कहानियाँ लिखीं, किन्तु उनकी प्रत्येक कहानी हिन्दी कथा-साहित्य की अमूल्य धरोहर मानी जाती है। उनकी रचनाओं में जीवन का यथार्थ बिना किसी कृत्रिमता के प्रस्तुत हुआ है। उन्होंने मध्यवर्गीय समाज की मानसिक उलझनों, पारिवारिक संबंधों के बदलते स्वरूप, पीढ़ियों के संघर्ष, सामाजिक विसंगतियों तथा मानवीय मूल्यों के क्षरण को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया। इसी कारण उनकी कहानियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक और चर्चित हैं जितनी

अपने प्रकाशन काल में थीं।

एक सफल कथाकार होने के साथ-साथ ज्ञानरंजन हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता के भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व रहे। उनकी संपादित पत्रिका **'पहल'** ने हिन्दी साहित्य में नई प्रतिभाओं को मंच प्रदान किया तथा प्रगतिशील, जनवादी और वैचारिक साहित्यिक चेतना को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। इस प्रकार ज्ञानरंजन का जीवन और साहित्य केवल एक रचनाकार की उपलब्धियों का परिचायक नहीं, बल्कि समकालीन हिन्दी साहित्य की वैचारिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का भी महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है।

मुख्य शब्द: ज्ञानरंजन, साठोत्तरी हिन्दी कहानी, नई कहानी आन्दोलन, मध्यवर्गीय जीवन, पहल पत्रिका, हिन्दी कथा-साहित्य, समकालीन कहानी, प्रगतिशील साहित्य, कहानी-आन्दोलन, साहित्यिक पत्रकारिता.

Creative Commons

OPEN ACCESS

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:

ज्योति कुमारी. (2025). ज्ञानरंजन : जीवन एवं सृजन. Young Researcher, 14(4), 89 – 93.

https://doi.org/10.5281/zenodo.21823507

साहित्यिक यात्रा, 'पहल' का सम्पादन एवं पत्रकारिता:

ज्ञानरंजन द्वारा कहानियों का प्रत्यक्ष लेखन मुख्य रूप से सन् 1956 से 1973 ई. तक की समयावधि में हुआ। यद्यपि उन्होंने परिमाण की दृष्टि से कम कहानियाँ लिखीं, तथापि गुणवत्ता और प्रभावशीलता के मानदंड पर उन्होंने कथा-साहित्य के क्षेत्र में अपार ख्याति अर्जित की। उनकी संपूर्ण कहानियाँ छह स्वतंत्र कहानी-संग्रहों में प्रकाशित हुईं।
एक समर्थ कहानीकार के साथ-साथ ज्ञानरंजन ने एक निष्ठावान संपादक के रूप में भी अभूतपूर्व प्रतिष्ठा अर्जित की। उन्होंने जबलपुर से प्रकाशित गैर-व्यावसायिक साहित्यिक पत्रिका 'पहल' का लगभग पैंतीस वर्षों तक अनवरत संपादन किया, जिसके अंतर्गत 'पहल' के 90 ऐतिहासिक अंक प्रकाशित हुए। 'पहल' को स्थानीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर स्थापित करना उनका स्वप्न था। साहित्यिक पत्रकारिता में इस अप्रतिम अवदान हेतु उन्हें प्रतिष्ठित **'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार'** से सम्मानित किया गया।

ज्ञानरंजन प्रगतिशील लेखक संघ (प्रलेसं) के लगातार चौदह वर्षों तक राष्ट्रीय महासचिव रहे। हिन्दी की बहुचर्चित साहित्यिक पत्रिका 'पाखी' ने सितम्बर

2012 में ज्ञानरंजन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केन्द्रित एक विशेषांक का प्रकाशन किया था।

'पहल' के 90 अंकों के निरंतर सम्पादन के पश्चात् अत्यधिक शारीरिक एवं आर्थिक संघर्षों के कारण कुछ समय के लिए इसका प्रकाशन स्थगित हुआ, किन्तु पुनः जनवरी 2013 में अंक 91 के साथ इसका गरिमामय सम्पादन एवं प्रकाशन पुनः प्रारम्भ हुआ।

समकालीन साहित्यकारों एवं समीक्षकों की दृष्टियाँ:

डॉ. मलय के अनुसार:

"ज्ञानरंजन जी.एस. कॉलेज में प्राध्यापक थे और उसी दौर में उनकी कहानियाँ अत्यधिक चर्चा में रहीं। 50-60 के दशक में इलाहाबाद से निकलने वाली पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ निरंतर छपती थीं। ज्ञानरंजन इसलिए भी विशेष रूप से चर्चित हुए क्योंकि उन्होंने मध्यवर्ग की नई पीढ़ी की सोच और तत्कालीन सामाजिक स्थितियों को अत्यंत प्रामाणिकता से पकड़ा। उनकी 'पिता' कहानी विशेष रूप से दर्शनीय है, जिसमें श्रम को समर्पित पिता के आचरण तथा नई पीढ़ी में किसानी संस्कारों के क्षरण को उभारा गया है।"

"ज्ञानरंजन जी.एस. कॉलेज में प्राध्यापक थे और उसी दौर में उनकी कहानियाँ अत्यधिक चर्चा में रहीं। 50-60 के दशक में इलाहाबाद से निकलने वाली पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ निरंतर छपती थीं। ज्ञानरंजन इसलिए भी विशेष रूप से चर्चित हुए क्योंकि उन्होंने मध्यवर्ग की नई पीढ़ी की सोच और तत्कालीन सामाजिक स्थितियों को अत्यंत प्रामाणिकता से पकड़ा। उनकी 'पिता' कहानी विशेष रूप से दर्शनीय है, जिसमें श्रम को समर्पित पिता के आचरण तथा नई पीढ़ी में किसानी संस्कारों के क्षरण को उभारा गया है।"

रवीन्द्र कालिया के अनुसार:

"ज्ञानरंजन उन दुर्लभ मित्रों और प्रिय लेखकों में से हैं जो साहित्य को ओढ़ते-बिछाते नहीं हैं। उन्हें न तो किसी ने कभी अपनी कहानियों का बखान करते सुना और न ही स्वयं कहानी सुनाते देखा, जबकि उस दौर में कहानी सुनाने का रोग प्लेग की भांति फैला हुआ था।"

"ज्ञानरंजन उन दुर्लभ मित्रों और प्रिय लेखकों में से हैं जो साहित्य को ओढ़ते-बिछाते नहीं हैं। उन्हें न तो किसी ने कभी अपनी कहानियों का बखान करते सुना और न ही स्वयं कहानी सुनाते देखा, जबकि उस दौर में कहानी सुनाने का रोग प्लेग की भांति फैला हुआ था।"

काशीनाथ सिंह के अनुसार:

"मैंने किसी भी मंच पर ज्ञानरंजन को माइक के आगे खड़ा नहीं देखा। वह आयोजन को बाहर से देखेंगे-सुनेंगे, और अंदर आएँगे भी तो भीड़ में पीछे बैठेंगे। वह हमेशा कुशल संयोजक रहेंगे, परंतु मंच से सम्बोधन दूसरा ही करेगा।"

"मैंने किसी भी मंच पर ज्ञानरंजन को माइक के आगे खड़ा नहीं देखा। वह आयोजन को बाहर से देखेंगे-सुनेंगे, और अंदर आएँगे भी तो भीड़ में पीछे

बैठेंगे। वह हमेशा कुशल संयोजक रहेंगे, परंतु मंच से सम्बोधन दूसरा ही करेगा।"

डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार:

"ज्ञानरंजन अपने कार्य और संकल्प के धनी हैं। एक बार वामपंथी विचारधारा से जुड़े तो निष्ठापूर्वक उससे संबद्ध रहे। सीमित साधनों और बिना किसी तामझाम के जबलपुर जैसी जगह से 'पहल' जैसी अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका निकालना अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं वंदनीय है।"

"ज्ञानरंजन अपने कार्य और संकल्प के धनी हैं। एक बार वामपंथी विचारधारा से जुड़े तो निष्ठापूर्वक उससे संबद्ध रहे। सीमित साधनों और बिना किसी तामझाम के जबलपुर जैसी जगह से 'पहल' जैसी अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका निकालना अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं वंदनीय है।"

हिन्दी कहानी आन्दोलन और ज्ञानरंजन:

नई कहानी आन्दोलन के पश्चात हिन्दी कथा-साहित्य में अनेक वैचारिक आन्दोलनों का प्रादुर्भाव हुआ:

अकहानी आन्दोलन: सन् 1960 के बाद गंगा प्रसाद विमल के प्रवर्तन में अकहानी आन्दोलन का आगाज़ हुआ। अकहानी ने स्थापित मूल्यों का निषेध करते हुए मोहभंग, विद्रोह और अजनबीपन को स्थान दिया। यद्यपि इसमें यौन-संदर्भों और अति-वैयक्तिकता के कारण कुछ विकृतियाँ आईं जिससे यह दीर्घजीवी नहीं हो सका, तथापि इसने मध्यवर्गीय जीवन के अकेलेपन, ऊब और निरर्थकता-बोध को प्रमुखता से चित्रित किया।

समानांतर एवं सक्रिय कहानी आन्दोलन: राकेश वत्स द्वारा प्रवर्तित 'सक्रिय कहानी आन्दोलन' ने आम आदमी की विद्रोहात्मक चेतना और शोषित वर्ग के यथार्थ को मुखरित किया। इन आंदोलनों ने युगीन परिस्थितियों और लोकचेतना को जागृत करने में तत्कालिक योगदान दिया।

साठोत्तरी पीढ़ी के 'चार यार' एवं ज्ञानरंजन का कथा-संसार:

साठोत्तरी हिन्दी कहानी के दौर में 'चार यार' के रूप में प्रसिद्ध मण्डली— ज्ञानरंजन, दूधनाथ सिंह, काशीनाथ सिंह एवं रवीन्द्र कालिया में सर्वप्रथम सर्वाधिक प्रसिद्धि एवं स्वीकार्यता ज्ञानरंजन को प्राप्त हुई।

ज्ञानरंजन की कुल 25 कहानियाँ प्रकाशित हुईं, जो 6 कहानी-संग्रहों के रूप में सामने आईं। आलोचकों का सर्वसम्मत मत है कि उनकी 25 कहानियों में से एक भी कहानी शिथिल या उपेक्षा योग्य नहीं है। कालांतर में इन समस्त 25 कहानियों को एकत्र करके **'सपना नहीं'** शीर्षक से बृहत् संग्रह प्रकाशित किया गया।

ज्ञानरंजन की 25 कालजयी कहानियाँ ('सपना नहीं' संग्रह):

अमरूद का पेड़, छुप्पियाँ, याद और याद, मनहूस बंगला, गोपनीयता, क्षणजीवी, दिवास्वप्नी, खलनायिका और बारूद के फूल, सीमाएँ, दिलचस्पी,

छलांग, हास्यरस, दाम्पत्य, आत्महत्या, एक नमूना सार्थक दिन, रचना प्रक्रिया, कलह, फेंस के इधर और उधर, शेष होते हुए, संबंध, पिता, यात्रा, घंटा, बहिर्गमन, अनुभव।

अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्वीकार्यता:

ज्ञानरंजन की कहानियाँ अनेक भारतीय भाषाओं के साथ-साथ अंग्रेजी, रूसी आदि विदेशी भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। भारतीय विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त लेनिनग्राद (रूस) तथा हाइडेलबर्ग (जर्मनी) विश्वविद्यालय के अध्ययन केंद्रों के पाठ्यक्रमों में उनकी कहानियाँ समाविष्ट हैं। लन्दन के प्रसिद्ध पैंग्विन पब्लिकेशंस की 'एंथोलॉजी ऑफ इंडियन लिटरेचर' में भी उनकी रचनाएँ सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त दूरदर्शन द्वारा उनकी कहानियों पर आधारित दो लघु फिल्मों का निर्माण भी किया जा चुका है।

निष्कर्ष:

ज्ञानरंजन का कथा-साहित्य मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियों, संयुक्त परिवार के विघटन, टूटते दाम्पत्य संबंधों, अजनबीपन, घुटन तथा मानवीय मूल्यों के ह्रास का अत्यंत सूक्ष्म, संवेदनशील और यथार्थपरक दस्तावेज प्रस्तुत करता है। उनकी कहानियों में पारिवारिक दायित्वों, आत्मीय संबंधों, सामाजिक परिवर्तन तथा वैचारिक द्वंद्वों के मध्य संतुलन स्थापित करने का ईमानदार प्रयास परिलक्षित होता है। उन्होंने अपने विशिष्ट कथाशिल्प, मनोवैज्ञानिक दृष्टि तथा जीवनानुभवों के माध्यम से हिन्दी कहानी को नई संवेदना और व्यापक वैचारिक आधार प्रदान किया।

ज्ञानरंजन केवल एक शीर्षस्थ कथाकार ही नहीं, बल्कि **'पहल'** के माध्यम से तीन से अधिक दशकों तक हिन्दी साहित्य की प्रगतिशील चेतना को दिशा देने वाले युग-निर्माता संपादक भी रहे। साहित्यिक पत्रकारिता, संपादन और कथा-सृजन के क्षेत्र में उनका योगदान हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर है। उनका जीवन, व्यक्तित्व और साहित्यिक अवदान आज भी शोधार्थियों, साहित्यकारों तथा पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत है और भविष्य में भी हिन्दी कथा-साहित्य के विकास में उनका योगदान सदैव स्मरणीय बना रहेगा।

सहायक ग्रन्थ-सूची:

1. ज्ञानरंजन, उपस्थिति का अर्थ, दिल्ली: सेतु प्रकाशन, 2020 ई.
2. ज्ञानरंजन, कबाड़खाना, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2021 ई.
3. ज्ञानरंजन, प्रतिनिधि कहानियाँ, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2018 ई.
4. ज्ञानरंजन, फेंस के इधर और उधर, दिल्ली: अक्षर प्रकाशन, 1968 ई.
5. ज्ञानरंजन, मेरी कहानियाँ, दिल्ली: राजपाल एण्ड सन्स, 2022 ई.
6. ज्ञानरंजन, यात्रा, इलाहाबाद: रचना प्रकाशन, 1971 ई.
7. ज्ञानरंजन, सपना नहीं, दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 1997 ई.